बी.आर. अम्बेडकर का जीवन चित्रण एवं जाति व्यवस्था पर विचार

डॉ. परमानन्द चौधरी

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891ई. को महाराष्ट्र के 'महो' नामक स्थान में हुआ था। वे महार जाति के एक अत्यन्त गरीब परिवार में जन्मे थे। महार जाति महाराष्ट्र में अछूत समझी जाती थी। जन्म के समय उनका नाम भीम सकलपाल था। जिस समय भीमराव अम्बेडकर का जन्म हुआ था उस समय निम्न जाति के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें अपने विद्यार्थी जीवन तथा जीवन के प्रारम्भिक काल में निम्न जाति में उत्पन्न होने के कारण अनेक बार अपमान सहना पड़ा जिसने उनके भविष्य की रूपरेखा तैयार कर दी तथा उन्होंने अपना जीवन दलित वर्ग के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। अम्बेडकर बचपन से ही बहुत परिश्रमी, संयमी और धर्मनिष्ठ थे। उन्होंने 1907 में भ्पहौबीववस की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् उन्हें बड़ौदा के महाराजा ने छात्रवृत्ति प्रदान की जिसके सहारे उन्होंने भ्पहीमत म्कनबंजपवद प्राप्त की और 1912 में ठण्।ण् पास कर लिया। 1913 में बड़ौदा के महाराजा की छात्रवृत्ति पर ही अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए गए। वहाँ 1915 में उन्होंने अर्थशास्त्र विषय में डण्।ण् की परीक्षा उत्तीर्ण की। वहीं वे विश्वविख्यात अर्थशास्त्री प्रो. सैल्गमैन के निकट सम्पर्क में आए। 1916 में उन्होंने विश्व की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था स्वदकवदैबीववस वम्बिवदवउपबे ंदक च्वसपजपबंसैबपमदबम में प्रवेश लिया। अगस्त, 1917 में वे भारत लौट आए और महाराजा बड़ौदा के 'सैनिक सचिव' के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। बड़ौदा राज्य में उच्च पद पर होने के बावजूद भी उनके साथ अच्छा नहीं होता था क्योंकि वे अछूत थे। चपरासी भी उनका अपमान करते थे। 1920 में वे पुनः अध्ययन के लिए लंदन गए और 1924 में उन्होंने डेंजमत वैबिपमदबम की उपाधि प्राप्त की। अपने शोध–प्रबंध पर उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से चेण्क्ण् की उपाधि प्राप्त की। इसके साथ ही उन्होंने ठंत।बज सूं की उपाधि भी प्राप्त की।